Topic Date

बच्चो आओ, तुम्हे बुलाऊँ।
जीवन के, कुछ राज़ बताऊँ॥
गहरी बात, एक समझाऊँ।
कविता नई, सुनाता जाऊँ॥
ईश्वर ने, ये धरा बनाई।
और तरह-तरह, से करी सजाई॥
छोटा सा एक राज़ छुपाया।
राज़ छुपाकर, ये दिखलाया॥
ताकत दी किसी को, तो निर्बल कोई बनाया।
गोरा किया किसी को, तो काला भी बनाया॥
ऊँचा कोई है देखो, तो छोटा कोई यहाँ है।
नर और नारी दोनों, एक से कहाँ हैं॥
पर बाहर की रूप रेखा, धोखा है ये सारा।
एक दूसरे का फर्क, इम्तेहान है हमारा॥
नारी को जान अबला, लोगों ने है सताया।
ब्याह के मंडप में, बचपन ही जलाया॥
पर इस धोखे, में तुम मत आना।
और राज़ धरा का समझते जाना॥

नशरह फातिमा
6-D